Postal Registration No. G/CHD/0107/2012-14 RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"kZ 14 vad 01 30 tuojh] 2014 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

दीन के भ्राता, कलम के धनी सर छोटू राम

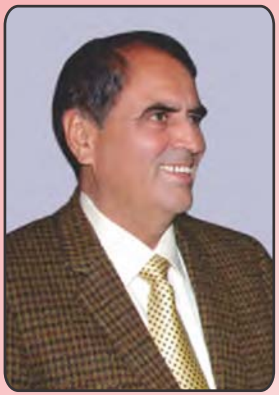

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

अपने लिए हर कोई जी लेता है, समाज के मर्म को बिरला ही कोई पहचानता है और पहचान भी ले तो भी अपनी सुख सुविधा का ध्यान सदा रखा जाता है लेकिन सर से दीन बंधु का सफ़र आसाना ना थी। गढ़ी सांपला (रोहतक) में एक छोटे से किसान के बेटे ने सब कुछ बचपन से झेला और कुछ कर गुजरने की ठानी और जो सोचा वही कर दिखाया। छोटू से छोटू राम तब सर छोटू राम और अंत में गरीब मजलूम के मसीहा दीन बंधु सर छोटूराम बने। यह राह इतनी आसान नही थी लेकिन अनेकों बाधाएं पार करते हुए इस मुकाम को हासिल किए आज कृतज्ञ राष्ट्र स्वत: कह रहा है –

‘उए दर्द मदां दिया दर्दीया, किते कबरां बिचो बोल।
आज किसी नई जन कल्याण की कोई नई सोच खोल ।।’’

कुली–गुली–जुली (रोटी कपड़ा और मकान) मानव जीवन की आधारभूत सरंचना है। इस जरूरत को हर कोई जानता है लेकिन इसके उत्पादक की कठिनाई को कोई नहीं समझता। विडंबना है कि तीनों का अधार कृषि ही है। रोटी के लिए अनाज, कपड़े के लिए कपास और मकान के लिए लकड़ी खेत से ही मिलती है। समाज को उद्योग की आवश्यकता है ताकि इस उत्पाद को उचित रूप से ढाल सके। उद्योगपति इस प्रोसैसिंग हेतू अपनी लागत और लाभांश जोड़ कर कीमत तय करता है जो उसका हक है लेकिन किसान को ऐसी सुविधा नहीं है। किसान कर्ज, मर्ज, गर्ज में पिसता है। सर्दी, गर्मी और बरसात मौसम की मार झेलता है। फ़सल को नुकसान देने वाले कीड़े–मकौड़े, कभी सूखा कभी डूबा की मार खाता हुआ सदा आसमान की ओर दया दृष्टि बनाए रखने और मेहर की दुआ मांगता हुआ फ़सल घर आने की उम्मीद लिए पूरा परिवार भूखे पेट बैठा होता है और फ़सल घर पर आने से पहले साहूकार का पंजा आ जाता है लेकिन फ़िर भी वह अपने उत्पाद की कीमत खुद तय करने का हक नहीं रखता। सर छोटू राम ने उसकी दिक्कतों को समझा और उसके समाधान हेतू इकागर चित होते हुए तन मन से लग गया।

जिला हिसार और गुड़गांवा आज का भिवानी, रिवाड़ी, फ़तेहाबाद, सिरसा जींद, कैथल, रोहतक, झज्जर तथा गुड़गांव अक्सर वर्षा ना होने के वजह से अकाल की मार खाता क्षेत्र था। कृषि के लिए पानी की नितांत आवश्यकता है बल्कि कहना उचित होगा कि जन बिना मछली ही नहीं बल्कि जल बिन किसान के हालत भी बदतर होते हैं।

दीन बंधु ने इस कहर से निपटने और बार–बार किसानों को दिए जाने वाले तकावी ऋणों पर सरकार द्वारा खर्च होने वाली भारी भरकम रकम से सदा–सदा के लिए निजात दिलाने हेतू सतलूज नदी पर बांध बनाकर पूरे क्षेत्र को वर्ष भर पानी की उपलब्धता से कृषि उत्पादन दोगुनी होने के कयास लगाए गए। दिसंबर 15, 1930 को यह सदन के पटल पर रख दिया गया हालांकि तब तक बहुत सा पानी बह चुका था और बांध की लागत बढ चुकी थी क्योंकि इसकी योजना 1915 से 1925 के बीच हुए सर्वे पर आधारित थी जिसमें बार–बार रोड़े और अटकलें आ रही थी।

शेष पेज 2 पर

दीनबन्धु सर छोटूराम जयंती समारोह 04.02.2014

जाट सभा चंडीगढ़ द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु सर छोटूराम की 133वीं जयंती के शुभ अवसर पर समारोह का आयोजन 04 फरवरी, 2014 को दीनबंधु सर छोटूराम जाट धर्मशाला, सैक्टर–6, पंचकूला में किया जाएगा। चौधरी बीरेंद्र सिंह, सांसद (राज्यसभा) समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। श्री आरएस मलिक, आईएएस (सेवानिवृत्त) पैटर्न ऑफ जाट सभा समारोह की अध्यक्षता करेंगे। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं, खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों, भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर मैकिंग प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्यों को भी जनवरी 2013 से दिसंबर 2013 के बीच जो सदस्य सेवानिवृत्त हुए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। अत: वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम तथा सेवानिवृत्त का महीना व दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 20 जनवरी 2014 तक सूचित करें। इस समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित हिस्सा लें।

'k"k i`t &1

दीन बंधू ने यह सभी अटकलें बाधाएं अपने तेज दिलो दिमाग से पार कर ली जिसमें सक्कर बैराज को होने वाली क्षति, बंबे सरकार द्वारा खड़ी की गई बाधाएं, महाराज बिलासपुर के क्षेत्र की बांध के पानी के नीचे आने वाली भूमि तथा किसानों की क्षति, सिंध क्षेत्र को 6 करोड़ का मुआवजा शामिल थी। दीन बंधु ने सिरसा सहकारी फर्म में पैदा हुई कपास का जिक्र करते हुए बताया कि क्षेत्र की भूमि बहुत उपजाउ है और पानी के बिना प्रति एकड़ कपास का उत्पादन 27 मन के करीब था और पानी की उपलज़्धता से यह 40 मन हो गया। सर छोटू राम ने सदन को बतया कि इस हिसाब से बार-बार अकाल की स्थिति पर सरकार द्वारा किए जाने वाले खर्चे जो कि केवल गुड़गांवा क्षेत्र में 42 लाख रूपये वार्षिक औसतन तकावी ऋण थे, सदा-सदा से निजात के साथ-साथ क्षेत्र की बैबदगी होगी। केवल किसान ही नहीं, वाणिज्य में भी प्रगति होगी और क्षेत्र विकास के नए-नए आयाम कायम करेगा। सर छोटू राम की मेहनत रंग लाई, बांध बनना शुरू हो गया। आधुनिक भारत का मंदिर कहलाने वाले भाखड़ा बांध तैयार हुआ जिससे सिंचाई के साथ-साथ बिजली उत्पादन भी हो रहा है जिससे देश के कई कल कारखाने चल निकले। हालांकि इस सपने को साकार करने वाला तब तक इस नश्वर संसार को छोड़कर जा चुका था लेकिन उनकी स्मृति की सुगधं चारों ओर फैल गई। बांध की उंचाई भी बढ़ाई गई।

कृषि भूमि किसान की रोजी रोटी का एक मात्र साधन है। गरीब किसान-मजदूर के मसीहा सर छोटूराम इस तथ्य से भली भांति अवगत । आज एस ई जैड के नाम किसानों की जमीन हड़पने तथा उन्हे खुदकशी करने पर मजबूर करने के लिए पंजीपतियों की एक नई बिरादरी उभर कर सामने आई है और इस में वर्तमान सरकारें तथा उच्च कोटी के समरमाएदारों की मिलीभगत प्रतीत होती है। अत: आज भी किसान दर्द से कहराता है और छटपटाता है लेकिन आज ज़ी उसके दर्द को ना तो कोई समझने वाला है न ही उस के दर्द की कोई दवा। इसलिए दीनबंधु ने 6 दसक पूर्व डा0 सर इकबाल के शज़्दों में यह कहा था कि “इकबाल कोई महरम अपना नहीं जहां में, मालूम ज़्या किस को दर्दे निहां हमारा।” उन्होने कभी मंदिर, मस्जिद में पूजा अर्चना को अधिमान नहीं दिया बल्कि अपने प्रकृति प्रेम का ज्वलंत उदाहरण अपना जन्म दिन 'बंसत पंचमी' को मना कर दिया। उनका मानना था कि किसान की सभी आशाएं व त्योहार कृषि से जुड़े हैं। किसान का जीवन जितना जटिल है उसका बर्ताव उतना ही सरल है वह कभी अपनी परिवार की चिंता नहीं करता। सब कुछ राम भरोसे छोड़ सज़्त मेहनत पर जुटा रहता है। गीता का उपदेश “कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर” को ही लक्ष्य मानकर हल का सिपाही अपना जीवन गुजार देता है। सर छोटूराम के जीवन काल में किसान की आर्थिक दशा बहुत दयनीय थी उपर से साहूकार की धांधली कृषक समाज को बेड़ियों में जकड़ कर रखती थी।

सर छोटूराम ने किसान की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया तथा उसे साहूकार एवं सूदखोर के शिकंजे से निकालने हेतू सबसे पहले 'काणी डंडी काणी बाट प्रथा' को समाप्त करवाया तथा ऐसे अनेकों सुधारात्मक पग उठाए जिससे कृषक समाज में जागृति आई हालांकि कृषि आज भी लाभकारी नहीं है ज़्योंकि इस समाज को अभी भी एक छोटूराम की तलाश है। आज भी कृषक समाज के उत्पादन का मूल्य कोई दूसरा तय करता है जो 4-6 माह की सज़्त मेहनत से मौसम की मार झेलकर पैदा की हुई फसल खरीदते वक्त औने-पौने भाव खरीदी जाती है लेकिन कुछ हफ्ते उसके गोदाम में रखने उपरांत दो गुने भाव बेची जाती है। उदाहरणार्थ, गत सीजन किसान से गेहूं 1280 रूपये प्रति क्विंटल खरीदी गई जिस पर आढ़त-किराया-झरना किसान के सिर रहा लेकिन आज गेहूं 20 रूपये से उपर प्रति किलो बिक रहा है। आलू 50 पैसे किलो खरीद कर चिप्स ला-नीले चटकीलें फिऊओं में बद कर 10 रूपये का 100 ग्राम बिक रहा है। दालें 50 रूपये से 65 रूपये किलों तक बिकती रही हैं।

चौधरी छोटूराम ने किसान की दशा उसी समय भांप ली थी तथा उसे अपने बच्चों को पढ़ाने लिखाने की प्रेरणा दी। मेधावी छात्रों को वे अपने खर्चे पर भी पढ़ाने का प्रयास करते रहे इसलिए उन्होने 'किसान कोष' की सूरत में एक 'वजीफा कोष' भी लाहौर में स्थापित किया था। पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता अज़्दुस कलाम उसी वजीफे से पढ़े थे। पुरूस्कार जीतने पर उन्होने स्वंय कहा था कि अगर छोटूराम ना होता तो अज़्दुस कलाम आज इस मुकाम पर ना होता। सर छोटू राम ने “भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिले तनै टूटे जूते वहां मिलेगें बूंट” का नारा देकर किसान को अपनी आर्थिक दशा सुधारने हेतू नौकरी करने की भी प्रेरणा दी। चौधरी छोटूराम जैसी बहुमुखी प्रतिभा को हमें आज के संदर्भ में समझना-देखना होगा। जब तक उनकी विचार धारा युवा वर्ग में पूर्णत: जागृत नहीं होगी तब तक उनकी ग्रामीण क्रांति या महात्मा गांधी का पूर्णस्वराज भारत में नहीं आ सकता। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि दीन बंधु की विचारधारा का सफर मानसिक स्तर पर तीव्र गति से चले ताकि 'ग्राम स्वराज' का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय में युग प्रवर्तक होते हैं तथा आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। चौधरी छोटूराम ऐसे ही एक युग पुरूष थे जिन्होने कृषि क्रांति का सुत्रपात किया। आधुनिक चेतना के वे सुत्रधार थे। किसान के हितों की वकालत करते हुए वे वायसराय तक भिड़ गए।

घर के कोने और माता के अंचल में बड़ा अन्तर है। एक शीतल जल का संसार और दूसरा मरुभूमि – प्रेमचंद

चौ0 छोटूराम का जीवन उड़ते बालू-कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। उन्होने मुंशी प्रेमचंद के पात्र 'होरी' गोबर और धनियां की पीड़ा का अनुभव किया था, आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया बल्कि एक क्रांति दूत बनकर उभरा। वे हमेशा कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' चौ0 छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने जिसके द्वारा उन्होने शोषित किसान को सेठ-साहूकारों के चुंगल से छुड़ाया। दीन बंधु सर छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ-साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त भारत के नर-नारी सुपत्र-सुपुत्रियां तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

दीन बंधु सर छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं को आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने पर उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्षों तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। आज वैज्ञानिकों को इसकी सुध आई है। समय रहते उचित पग उठाए होते तो आज ओजोन लेयर को क्षति नहीं पहुंचती और इंसान भंयकर बिमारियों से बचा रहता। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

दीनबंधु की राजनैतिक यात्रा भी अनूठी थी। वे सन 1923 में पहली बार रोहतक (दक्षिण-पूर्वी ग्रामीण क्षेत्र) से पंजाब विधानपरिषद के सदस्य बने और राजनीतिक पारी शुरू की। सन 1924 में उन को चौधरी लालचंद के स्थान पर पंजाब मंत्रीमंडल में शामिल किया गया जो उनके महापुरूष बनने की दिशा में प्रथम कदम था। पंजाब विधान सभा में गैर-कृषक सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद उन्होने किसान समुदाय के हित को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया था और यहीं से उनकी राजनीतिक प्रतिभा और सूझबूझ का चारों और सिक्का चलने लगा था। यहीं से चौ0 छोटूराम का भविष्य निर्माण हुआ। उनका मुख्य लक्ष्य पंजाब के किसान को गणदाता के चंगुल से मुक्ति दिलाना था। इस मिशन प्राप्ति हेतू ही मानों उन्होने अवतार धारण किया हो। एक समय ऐसा भी आया जब उन्हें पंजाब प्रांत में सबसे समझदार और मंजा हुआ सियासतदान माना जाने लगा।

संयुक्त पंजाब में किसानों की आर्थिक मुक्ति हेतू छोटूराम ने जो भंयकर संघर्ष किया उसमें उनको पूर्ण विजय प्राप्त हुई। पंजाब के इतिहास में अन्य कोई ऐसा आंदोलन नहीं चला जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों को इतनी बड़ी संख्या में संघर्षरत कर दिया। छोटूराम बेजुबान किसान की मजबूत व प्रभावशाली आवाज बने। देहात के गरीब व किसानों के कष्टों को दूर करने के लिए अनेक बिल पारित करवाए। सन् 1937 के पंजाब विधानसभा के चुनाव में 175 में से 102 सीटें जीतने पर इन्हे सर की उपाधि से सम्मानित किया गया व जिन्नाह की पार्टी को मात्र 2 सीटें मिली थी। ऐसी महान विभूति को किसी एक जाति समुदाय से जोड़ा नहीं जा सकता । वे तो जन कल्याण की बात कर गरीब मजलूम के परोपकार रहे। दीन बंधु अपने जीवन की अंतिम यात्रा तक कामगार, काश्तकार व किसानों के दुखों में गमगीन रहते हुए हमेशा इन कौम के दुखड़े को यह कहकर उजागर करते रहे - इस कौम का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊं, डर है कि इसके गम में घुट-घुट के मर ना जाऊं।

आज किसान की दुर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिए सुखे, बाढ, बीमारी के बचाव हेतू केंद्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। सर छोटू राम ने एक किसान कोष स्थापित किया था उसी का दायरा बढ़ाकर सर छोटू राम को सच्ची श्रद्धांजली दी जा सकती है। इस कोष से किसान-मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं तथा किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। इसके साथ-साथ आज कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतीशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटू राम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वप्न साकार हो सके। इसी प्रकार किसान की भूमि अधिग्रहण की नीति पर पुनर्विचार किए जाने की आवश्यकता है ताकि कृषि भूमि पर आधारित समस्त ग्रामीण समाज की दयनीय हो रही आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ब्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

मुसिबत बताती है कि हम किस मिट्टी के बने है। - अज्ञात

Haryana's Nuclear Power Plant: Inviting Disaster

In an over-populated country like India with limited land and water resources and weak regulatory governance, setting up a nuclear plant in Haryana seems a strange decision

- **MG Devasahayam**

PRIME Minister Manmohan Singh is scheduled to soon lay the foundation stone of the 2800-MW Gorakhpur Nuclear Power Plant (GNPP) in Fatehabad district of Haryana. According to the Department of Atomic Energy (DAE), 1,503 acres of land have been acquired for the project, which will accelerate the pace of 'development'.

What has been left unsaid is that this water-guzzling plant is located on the fragile Fatehabad Branch of the Bhakra canal system. For operating this plant, the Haryana government has allocated 320 cusecs of water from the State's share under the Bhakra Water Sharing Agreement of 1959 between Punjab and Rajasthan. Haryana, being the successor state of Punjab, is legally bound by this agreement. Since the agreement mandates that Bhakra water can only be used for irrigation and generation of hydel power, the Bhakra-Beas Management Board (BBMB) cannot allocate water to the nuclear plant.Water use allotment for irrigation in the cultivable command area is 2.25 cusecs per thousand acres. According to estimates, 320 cusecs can irrigate about 142,000 acres. Thus, diverting this quantum of water to generate nuclear power will deprive a vast area of irrigation. Even after taking into account that 30 per cent of the water will be recycled back to the canal, the potential irrigated area lost would be about 100,000 acres. Further, the polluted water that would return to the canal would slowly poison downstream agricultural fields and drinking water. This canal is also plagued with frequent breaches that could pose a serious danger to the safety of the power plant.

Water is the lifeline of this semiarid region. Power generated in this nuclear plant would no doubt lead to the 'development' of MNC/commercial/ residential/industrial complexes, malls and theme parks in Delhi, Gurgaon and other places, but in the project-affected area, agriculture will suffer and radiation will cause serious damage to wildlife. In fact, on this count, the National Green Tribunal had ruled against the setting up of a GNPP residential colony in the neighbouring Badopal village.

There was no public consultation about the project. Prime farming land was acquired for the project, allegedly through coercion and bribing of landowners with huge compensation.

Legally too, this diversion of water is untenable. Water comes within the guarantee of Right to Life under Article 21 of the Constitution. A huge quantity cannot be diverted in an already water-deficit area in violation of the 1959 agreement, which permits collaboration for improving irrigation and generation of hydroelectric power only. The Environmental Impact Assessment of the project does not address this critical issue. All it says is: "....The Government of Haryana confirmed allocation of 320 cusecs of water for consumptive use through Fatehabad branch canal, sourced by Bhakra mainline tail-end at Tohana headworks".

There was no public consultation about the project. Prime farming land was acquired for the project, allegedly through coercion and bribing of landowners with huge compensation. The Central government is fully involved in this skullduggery. The Nuclear Power Corporation of India (NPCI) is the owner of the project, and the Ministry of Environment and Forest has dealt with the

मौन कभी–कभी बाणी से अधिक वाचाल होता है। – महात्मा गांधी

water issue in a most shabby manner by giving conditional environmental clearance to the plant. Pursuing a pre-set agenda, the Planning Commission has also given its in-principle approval.

Be that as it may, there are certain basic realities about nuclear power. First, people see, quite correctly, the nuclear reactor as a major threat to their lives and livelihood when the reactors are located in areas that support lakhs of people living off farming, fishing and other occupations. After the Fukushima nuclear disaster in Japan in 2011, this concern has become much more severe and tangible. The Indian government's response has been a combination of coercion, bribery, and propaganda. Clearly, its nuclear efforts are not respectful of human and democratic rights

The second reality is that nuclear energy is not the answer to India's electricity problems. The current nuclear capacity in the country is just 5,780 MW, about 2.5 per cent of the total generation capacity, and meeting not more than 1 per cent of the country's electricity needs. Even with optimistic assumptions, this is unlikely to increase to more than 5 per cent for decades. The DAE has long made ambitious projections and failed to deliver. In 1969, the nuclear establishment had predicted that by 2000, there would be 43,500 MW of nuclear power-generating capacity. In 2011, the figure was only 4,800 MW and the government's ambition to increase it to about 64,000 MW by 2032 is utopian and impractical.

This is because the DAE's plans involve constructing hundreds of fast-breeder reactors. In the early decades of nuclear power, many countries pursued breeder reactor programmes, but practically all of them have given up on breeder reactors as unsafe and uneconomical. Imported light water reactors are unproven and prohibitively costly. The DAE has simply not learnt from the history of nuclear technology globally, and, thus, has shown a lack of organisational learning.

The third reality is that India needs electricity that is cheap and affordable, whereas nuclear power is expensive. If all costs-construction, commissioning, operation, decommissioning and safe storage of spent fuel-are honestly factored in, nuclear power is way costlier than any other source of electricity. Future reactors, both imported and indigenous, will continue to be much more expensive, making electricity generated here unaffordable for many sections of society. Expectations that the nuclear industry will learn from past experiences and lower the construction costs have been belied repeatedly. On the other hand, the cost has been going up while wind/ solar power costs are declining.

What is worse, Parliament's Public Accounts Committee (PAC) Report says that India's Atomic Energy Regulatory Board (AERB) is weak, under-resourced and "slow in adopting international benchmarks and good practices in the areas of nuclear and radiation operation". The PAC recently tabled a scathing 81-page report in Parliament, critical of the decades-long delay in establishing an independent regulator for the nuclear industry.

The sum and substance of the PAC Report is that the failure to have an autonomous and independent regulator is clearly 'fraught with grave risks' for setting up nuclear power plants in India. The Fukushima lessons, as brought out by Japan's Independent Investigation Commission, are pointed, poignant and portend ill for nuclear power in an over-populated India with limited land and water resources and weak regulatory governance. In the event, the Prime Minister laying the foundation of GNPP is odd and inappropriate! G

The writer is a former IAS officer of the Haryana cadre with experience in the power sector-government and corporate. He was formerly SDM of Fatehabad subdivision, where this plant is located.

यश प्राप्त कर लेना सरल है, पर बचाये रखना बहुत कठिन । – विदूर

हमेशा दिलों में अमर रहेंगे दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम

बीएस गिल, सचिव जाट सभा

दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम बड़े बुद्धिमान, विद्वान, प्रवीण, राजनीतिज्ञ, कुशल शासक, ऋषि दयानन्द सरस्वती के सच्चे शिष्य, कर्मयोगी, ईमानदार, निपुण कार्यकर्ज़ा, चरित्रवान, समाज सुधारक, सिद्धान्तों के धनी, दलितों एवं मजदूरों के हितकारी एवं रक्षक, किसानों के मसीहा, निडर नेता, उदार हृदय, साहसी वीर, सच्चे देशभक्त और अग्रेजों के विरोधी थे।

19वीं शताज़्दी में भारतवर्ष में बड़े-बड़े महान नेता महर्षि दयानन्द सरस्वती, गोपाल-कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, स्वामी विवेकानन्द जी, ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि पैदा हुए। जिन्होंने अपने-अपने ढंग से भारतवर्ष की आजादी, समाज सुधार, सच्चे धर्म की प्रेरणा और मानव जाति की उन्नति के लिए महान कार्य किये। इसी शताज़्दी में पैदा होने वाले चौ. सर छोटूराम जी भी इन्हीं प्रसिद्ध महान व्यक्तियों की मण्डली में एक योग्य नेता के रूप में समानता रखते हैं। प्रत्येक नेता देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अपने ढंग से कार्य कर गया। महर्षि दयानन्द जी का देश की सच्ची स्वतन्त्रता का लक्ष्य था, भारतवर्ष में धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करके देश के नागरिकों को वैदिक धर्मी बनाकर अंग्रेजों को यहां से खदेड़ कर आजादी प्राप्त करना। महात्मा गांधी तथा उनके साथियों का लक्ष्य था भारतवर्ष को अहिंसक आंदोलनों द्वारा, अंग्रेजों को यहां से निकालकर आजाद करवाना। इसमें वे सफल हुए परन्तु देश के दो भाग करके।

आज के युग में दो ही महान नेता ऐसे थे जो देश को संयुक्त रखकर स्वतन्त्रता प्राप्त करते तथा देश को अखण्ड रखते। वे थे दीनबन्धु चौ. छोटूराम और दूसरे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस। खेद है तथा यह देश का दुर्भाग्य था कि वे दोनों ही आजादी मिलने से पूर्व ही शहीद हो गये। देश को अखण्ड रखने में चौ. सर छोटूराम इन तमाम उच्च कोटि के कांग्रेसी नेताओं से बहुत महान एवं सच्चे देशभक्त थे।

चौधरी छोटूराम सच्चे अर्थों में राजर्षि थे। जो व्यक्ति राजगद्दी पर बैठकर भी तपस्वियों का जीवन व्यतीत करे अर्थात राजा बनकर भी फकीर बना रहे वही राजर्षि कहलाता है। वास्तव में वे एक राजर्षि थे।

चौ. छोटूराम की जो विशेषताएं लिख दी गई हैं उन सब का प्रमाण उनकी इस जीवनी के वर्णन में उचित स्थान पर लिख दिया जायेगा।

दीनबन्धु चौ. सर छोटूराम में सबसे अद्भुत विशेषता यह थी कि उन्होंने बिना मांगे ही अपनी बुद्धि द्वारा किसानों की आर्थिक, सामाजिक, कष्टपूर्ण जीवन तथा अशिक्षित दशा को सुधार कर उनकी चौमुखी उन्नति की। इसी कारण तो उनको किसानों का मसीहा कहा गया है। इस आधुनिक युग में संयुक्त पंजाब के शोषित तथा असहाय किसानों को चौ. छोटूराम ने हर पहलू से उन्नत किया, जिसकी बराबरी अन्य कोई नहीं कर सका है। सर चौ. छोटूराम ने किसानों की जो उन्नति की उसी से प्रेरणा लेकर आज भारतवर्ष के राजनीतिज्ञ नेताओं ने किसानों की ओर ध्यान देना आरज़्भ किया है।

सर चौ. छोटूराम ने अखण्ड पंजाब के मजदूरों, हरिजनों, दरिद्रों, पिछड़े वर्ग तथा दु:खियों की सहायता की, जिससे आपको दीनबन्धु कहा जाता है।

आपका जीवन निर्धनता और समृद्धि ने मानो लगभग आधा-आधा ही बांट लिया है। जन्म सन 1881 से 1913 ई. तक का 31-32 वर्षों का समय निर्धनता का था और उसी में आपने अपने जीवन का निर्माण किया। सन 1913 से 1945 (देहांत 9 जनवरी, 1945) तक लगभग उतने ही वर्षों का समय समृद्धि एवं शान शौकत का कहा जा सकता है। जीवन के ये दोनों समय अन्धकार एवं प्रकाश के रूप में भी विकसित किये जा सकते हैं। इन्हें फकीरी और राजसी भी कह सकते हैं। परन्तु इस दिव्य जीवन की दोनों विशेषताएं सदा बनी रहीं। फकीरी में राजसी ओज और राजसी दशा में फकीरी सादगी सदैव झलकती रही। राजसी ओज का प्रतिनिधित्व उनकी अदज़्य स्वाभिमान एवं आत्मसज़्मान की भावना सदा करती रही। जो किसी भी अवस्था में नहीं दबी, बल्कि समय-समय पर प्रत्येक अपेक्षित प्रसंग में उभरकर अपना वास्तविक रूप दिखाती रही। इनके प्रमाण आगे लिखित घटनाओं से ज्ञात हो जायेंगे।

चौ. सर छोटूराम के जीवन काल को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा।
2. नौकरी तथा वकालत।
3. राजनीति

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

चौ. छोटूराम जी का जन्म माघ सुदी संवत 1938विक्रमी तदनुसार 24 नवज़्बर सन 1881 के दिन गढ़ी सांपला गांव जिला रोहतक में ओहलान क्षेत्र के एक साधारण जाट किसान चौ. सुखीराम के कच्चे घर में हुआ था। आपकी माता जी का नाम श्रीमती सिरयां देवी था। दादा श्री रामदास और परदादा श्री रामरत्न थे। आपका नाम रामरिछपाल रखा गया। दो भाइयों, नेकीराम और रामस्वरूप से छोटा होने के कारण, घर के लोग रामरिछपाल को लाड-प्यार से छोटू कहने लगे। आगे चलकर वह छोटू से छोटूराम कहलाने लगे।

आंसू पुरुष को नही, स्त्रियों को शोभा देते है। - प्लेटों

आपके पिता चौ. सुखीराम एक साधारण किसान थे जिनके पास खेती करने के लिए काम चलाऊ भूमि थी। वे कुछ रूई का लेन-देन भी करते थे जिसमें उनको काफी नुक़्सान हो गया। फलस्वरूप उनके जिज़्मे कुछ कर्जा हो गया। उनका देहान्त 1905 ई. में हो गया और उनका छोड़ा हुआ कर्जा चौ. छोटूराम ने अपनी वकालत से पैसा कमाकर सन् 1913 में चुकाया।

छोटूराम बचपन से बड़े नटखट थे। गली-पड़ोस के बच्चों से मारपीट करना उनके लिए मामूली बात थी। प्रकृति का यह नियम है कि बचपन में कुछ विशेषतायें रखने वाले बालक ही भविष्य में महापुरूष हुए हैं। दूसरे बालकों के साथ मारपीट या झगड़ा करने से तंग आकर उसके चाचा चौ. राजेराम ने छोटू को जनवरी 1, 1891 ई. को सांपला पाठशाला में दाखिल करा दिया। मास्टर मोहनलाल ने उनका नाम रजिस्टर में छोटूराम लिख लिया। सन 1895 में प्राइमरी परीक्षा में छोटूराम जिले में प्रथम आया और वजीफा प्राप्त किया।

बाल विवाह

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रारज़्भिक शिक्षा के समय ही लगभग 10-11 वर्ष की आयु में छोटूराम का विवाह 5 जून, 1893 को श्रीमती ज्ञानोदेवी के साथ सज़्पन्न हो गया था। श्रीमती ज्ञानोदेवी के पिता का नाम चौ. नान्हासिंह गुलिया क्षेत्र का जाट था, जिसका गांव बादली के निकट खेड़ी जट था। बाल विवाह के बावजूद भी छोटूराम अपनी पढ़ाई में जुटे रहे। माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए छोटूराम ने झज्जर के मिडल स्कूल में दाखिल होना पड़ा। उन दिनों झज्जर के लिए कोई सड़क नहीं थी, पैदल ही आवागमन होता था। छात्रावास भी नहीं होते थे। घर से ही खाने-पीने की चीजें महीने या पन्द्रह दिन के लिए पीठ या सिर पर लादकर ले जानी होती थी।

अमेरिका के प्रेसीडेण्ड श्री विल्सन भी एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। वे नित्य ग्यारह मील पैदल चलकर पढ़ने जाते थे। हमारे भूतपूर्व भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी निर्धन होने के कारण गंगा पार करने के लिये किश्ती वाले को केवल छः पैसे देने में भी असमर्थ थे। अतः अपनी पाठशाला जाने के लिए प्रतिदिन अपने सामान के साथ पढ़ने जाने व आने के लिए गंगा नदी को स्वयं तैर कर पार करते थे। यही दशा छोटूराम की भी थी। वे अपने गांव से 20-22 मील दूर झज्जर तक कभी पन्द्रह दिन का, कभी महीने भर का आटा, घी, दाल आदि सामान अपने सिर पर रखकर पैदल जाते थे।

उन दिनों पंजाब में मिडल की परीक्षा यूनिवर्सिटी की होती थी। उस वर्ष यानी सन 1899 में मिडल की परीक्षा में पंजाब भर से जो हजारों विद्यार्थी बैठे थे, उनमें सबसे अधिक नज़्बर श्री महताब राय के, दूसरे नज़्बर पर चौ. छोटूराम थे और तीसरे नज़्बर पर एक बंगाली युवक किशोरी मोहन आये थे। छोटूराम ने वजीफा प्राप्त किया। ¼Øe'k%

राजा के तीन सवाल

बहुत समय पहले की बात है। नरकपुर राज्य का राजा प्रजावत्सल व दयालु था। एक बार एक पढ़ा–लिखा युवक राजा के पास रोजगार के लिए आया। राजा को मन ही मन उसकी हिम्मत देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने युवक से कहा तुम मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर दो, अगर तुमने सही उत्तर दिया तो मैं तुम्हे अपना मंत्री बना लूंगा। युवक ने राजा के तीन प्रश्नों वाली बात मान ली।

राजा ने प्रश्न पूछना शुरू किया–

1. वह क्या है जो तुम यहां देते हो उसका फल तुम्हे मिल जाता है?
2. वह क्या है जो तुम यहां देते हो लेकिन उसका फल तुम्हें परलोक में मिलता है?
3. वह क्या है जो तुम यहां देते हो लेकिन उसका फल तुम्हें न तो यहां मिलता है और न ही परलोक में?

युवक ने कहा–राजन। आप मुझे 75 हजार रूपये के साथ ही एक हफ्ते का समय दीजिए। मैं आपके तीनों प्रश्नों का उत्तर दे दूंगा।

राजा ने उस पर विश्वास किया ओर उसके कहे के अनुसार उसे 75 हजार रूपये दे दिए। एक सप्ताह प्रतीक्षा करने के बाद युवक वापस आया और उसने राजा से कहा–हे राजन। जो धन आपने मुझे दिया था उसमें से पच्चीस हजार मैंने आपके बैंक खाते में डाल दिये हैं। जब भी आप चाहें ब्याज समेत अपना पैसा वापस ले सकते हैं। जो आपने यहां दिया उसका फल आपको यहीं मिल जाएगा। यह आपके पहले प्रश्न का उत्तर है।

पच्चीस हजार रूपये मैंने जरूरतमंद और गरीबों के खाने और कपड़े के लिए खर्च कर दिए। इस पुन्य का फल आपको परलोक में मिलेगा। और ये आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर है। बाकि बचे पच्चीस हजार मैंने शराब,शबाब, नाच गाने जैसी व्यर्थ की चीजों पर लुटा दिए। इन सब का फल न तो आपको यहां मिलेगा और न ही परलोक में। ये ही आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर है।

युवक न राजा से कहा– हे राजन। आशा है आपको अपने तीनों प्रश्नों का उत्तर मिल गया होगा। राजा मुस्कराया और उसने युवक को सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त राजा ने युवक को अपना मंत्री नियुक्त करने की घोषणा भी की।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमारी समझदारी, शिक्षा, विवेक, सूझ–बूझ और हाजिर जवाबी हमें उस ऊंचाई तक ले जाती है जिसके कि हम योग्य हैं।

जिससे रहस्य गोपन रखना नही आता, वह सफलता का मुंह नही देख सकता। – चाणक्य

किसान मसीहा चौ. छोटूराम - जिये तो सिर्फ किसानों के लिये

Mk- lrh'k R;kxh

भारतीय इतिहास में ऐसे विरले ही व्यक्तित्व होंगे जिन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी किये बिना महानायक का दर्जा हासिल किया हो। दलित चेतना के प्रवर्तक डॉ. अंबेडकर और पंजाब में किसान–मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित चौ. छोटूराम इस कड़ी के दो सशक्त हस्ताक्षर हैं। एक ओर, जहाँ डॉ. अंबेडकर ने स्वाधीनता को आवश्यक मानते हुए दलित उत्थान को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया वहीं दूसरी ओर चौ. छोटूराम ने सदियों से बेचारगी झेल रहे किसान की वेदना को आत्मसात कर उसे खत्म करने का बीड़ा उठाया। नतीजतन, कालांतर में डॉ. अंबेडकर सामाजिक आजादी व चौ. छोटूराम किसान समुदाय की आर्थिक आजादी के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

बसंत पंचमी के दिन उत्तर भारत, विशेषकर हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली देहात व राजस्थान में किसान अपने मसीहा चौ. छोटूराम को श्रद्धापूर्वक याद करते हैं, क्योंकि बसंत पंचमी के दिन ही वर्ष 1881 में रोहतक जिले के गढ़ी सापंला गांव में उनका जन्म हुआ था। यह काल अशिक्षा, निर्धनता व शोषण से भरपुर था। चौ. छोटूराम का परिवार भी इसका अपवाद नहीं था। तथापित युवा छोटूराम ने दिल्ली के सेंट स्टीफन सरीखे प्रतिष्ठित कॉलेज से बीए किया और बाद में आगरा से कानून की पढ़ाई की। 1912–1913 में ही उन्होंने रोहतक में वकालत शुरू की। तीन दशकों के जीवन में में उन्होंने निजी स्तर पर किसान का जों शोषण देखा था, वह एक दंश के रूप में उनके दिलों दिमाग में था। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया था यह लक्ष्य था किसान को कर्ज व आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाना। यही लक्ष्य उनके भावी सार्वजनिक व राजनीतिक जीवन की सक्रियता का आधार था।

वर्ष 1917 में जब रोहतक जिले में कांग्रेस की स्थापना हुई तो चौ. छोटूराम कांग्रेस के प्रधान बने लेकिन कांग्रेस और उनका साथ मुश्किल तीन साल तक ही निभा। कांग्रेस से उनके अलग होने की एक सैद्धांतिक वजह थी। महात्मा गांधी ने जब असहयोग आन्दोलन की शुरूआत की तो किसानों का आह्वान किया गया कि असहयोग के रूप में चे भू–राजस्व अदा न करें। छोटूराम कांग्रेस के इस निर्णय के खिलाफ थे और उसका विरोध करने की उनके पास एक बड़ी वजह थी। उस समय पंजाब भू–राजस्व कानून के तहत लगान का कोई भी अंश अदा न किये जाने की स्थिति में किसान की सारी भूमि जब्त किये जाने का प्रावधान था और यदि कांग्रेस की घोषणा पर अमल करते हुए किसान लगान का भुगतान रोकते तो उनका भूमिहीन होना तय था छोटूराम का मानना था कि यदि किसान भूमिहीन हो गया तो उसके लिए आजादी किस काम की होगी। उन्होंने पुरजोर कोशिश की कि भू–राजस्व न देने की बात को असहयोग आन्दोलन के दायरे से बाहर रखा जाएं। कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन में उन्होंने महात्मा गांधी की उपस्थिति में इस विषय को जोरदार तरीके से उठाया लेकिन बात अनसुनी कर दी गयी। उन्होंने अपने अखबार जाट गजट मे लिखा – हमसे कहा जा रहा है कि फौज की अपनी नौकरियां छोड़ दें, पढ़ना–लिखना बंद कर दें और गंवार बने रहें। कहा जा रहा है। कि हम लगान न दें, लेकिन इसका नतीजा यह होगा कि हमारी तमाम जमीन छीन जायेंगी। हमें असहयोग आन्दोलन पर विचार इस दृष्टि से करना चाहिए कि वह हमारे समाज के हितों की रक्षा में सहायक है अथवा नहीं। ऐसी स्थिति में उनके पास कांग्रेस छोड़ने के अतिरिक्त कोई और विकल्प नहीं रह गया था। मजबूरन उन्होंने कांग्रेस से खुद को हमेशा के लिए अलग कर लिया।

वर्ष 1920 में मांटेग्यु–चेम्सफोर्ड सुधारों की सिफारिश पर चुनाव हुए तो चौ. छोटूराम ने अपने जीवन का पहला चुनाव लड़ा। वे झज्जर–सोनीपत तहसीलों के हल्के से चुनाव में खड़े हुए। उनके खिलाफ महाजन पार्टी ने बादली के रिसालदार सरूप सिंह को खड़ा कर दिया। इस चुनाव में किसान विरोधी तमाम ताकतें छोटूराम को पराजित करने के लिए एकजुट हो गयीं। नतीजतन चौ. छोटूराम अपने सियासी जीवन के पहले चुनाव में पराजित हो गए। फिर वर्ष 1923 में यूनियनिस्ट पार्टी वजूद में आई। इस के संस्थापक मियां फजल–ए–हुसैन और सहसंस्थापक चौ. छोटूराम थे। इस नवोदित पार्टी ने पंजाब की राजनीति में आर्थिक सुधार पर एक कार्यक्रम पेश किया, जिससे हिन्दू, मुसलमान और सिख धार्मिक भेदभाव को मिटाकर एक साझा मंच पर आ गए। आर्थिक आधार पर हुआ यह राजनीतिक–सामाजिक ध्रुवीकरण एक महत्वपूर्ण घटना थी। वर्ष 1923 में जब काउंसिल के लिए चुनाव हुए तो सत्ता यूनियनिस्ट पार्टी के हाथों में आ गयी। यूनियनिस्ट पार्टी की इस सरकार में चौ. छोटूराम बतौर कृषि मंत्री शामिल हुए।

पंजाब के कृषि मंत्री बनने के बाद उन्हें वह शक्ति मिल गयी थी जिससे वह किसानों की बदहाली को काफी हद तक खुशहाली में बदल सकते थे। और उन्होंने ऐसा ही किया भी। पंजाब और हरियाणा का इलाका बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में किसी रेगिस्तान से कम नहीं था। यहां वर्षा का औसत डेढ़ इंच था। चौ. छोटूराम के प्रयासों से पंजाब की धरती की प्यास बुझनी शुरू हुई। उन्होंने किसान को महाजनी कर्जे से मुक्ति दिलाने की कानूनी व्यवस्था की। उनका पूरा ध्यान मां की जमीन और बेटे किसान की सेहत पर केंद्रित था। इतना ही नहीं, भाखड़ा नंगल बांध भी उन्हीं की देन है।

यह चौ. छोटूराम और उनकी पार्टी की नीतियों का ही नतीजा था कि मुस्लिम बहुल पंजाब में मुस्लिम लीग सरीखी सांप्रदायिक पार्टी अपने पैर नहीं जमा सकी। वे भारत विभाजन की कल्पना के धुर–विरोधी थे। उनके निधन पर 10 जनवरी, 1945 को दि ट्रिब्यून ने लिखा– "उन्मत सांप्रदायिकता के बार–बार होने वाले घोर अत्याचार के समक्ष वे जिब्राल्टर की चट्टान की भांति दृढ खड़े रहे।" महात्मा गांधी ने अपने शोक संदेश में कहा, "मैंने कभी सोचा न था कि उनका अंत इतना शीघ्र आ जायेगा। चौधरी सर छोटूराम में विद्यमान अनेक गुणों की मैं बहुत प्रशंसा करता हूं। स्पष्ट है कि चौ. छोटूराम सही अर्थों में सदा किसान के लिए जिए और देश की अखंडता व एकता के लिए उन्होंने पूरे मनोयोग से कार्य किया।"

An Open Letter to President of the World Bank

To

Mr. Jim Young Kim,
President World Bank,
1818-H Street NW,
Washington DC- 20433,
U.S.A

Dear Sir,

With utmost respect at my command, may I bring few important points for your kind consideration.

1. The mandate given to the World Bank is eradication of poverty from poor countries. But the august institution has failed to achieve this holistic objective even after 60 years of its existence. The Bank cannot claim to have eradicated total poverty even from a single nation as poor and tiny as Senegal. The level of poverty in some of the countries has increased in terms of number though it may have dropped in terms of percentage. I do not say that the Bank has not done anything. The Bank has done a lot but the desired results are not forthcoming and much below expectations. The situation is like that of a student preparing hard of the examinations but always scoring less marks. Therefore the fault lies somewhere in not chalking out a proper strategy.

2. What is most distressing is the fact that no blue print is visible with the Bank to wipeout poverty from the face of the world map in future. The harsh reality is that the pace of eradication of poverty in poor countries (China and Namibia are the only exceptions) is painfully slow. Major reasons are lack of infrastructure development and rising population. In many countries, population is rising 2.5-3.5 % per year. The World Bank therefore should come out with a document under the caption "Marshall Plan for Eradication of Poverty of all the Poor Nations by 2028". Some of the countries in Africa are still living in a primitive age.

3. The Bank is spending a huge amount on fat salaries and pensions of its employee and printing insipid reports. Even the printed material is available in the libraries 2-3 years after its publication. The Annual Report of the World Bank does not give any details about the existing status of poverty in various poor countries and measures being taken to wipe it out.

4. The Bank should shed its present approach of being a status-quoist and devise a new radical strategy for eradication of poverty of the poor nations. Instead of becoming a game changer, the Bank has reconciled to remain just an international agency for financial assistance.

5. The main cause of expanding poverty is the population explosion in most of the developing countries. The findings of the two reports of Clubs of Rome are coming true to a great extent. Strangely the Bank is totally silent on this burning issue. Even U.N.O. is not making adequate noise against this cliff hanger.

6. I am an expert on the subject of eradication of poverty and I can say with authority that the objective is achievable within a period of 10-15 years. I have a simple strategy to eradicate poverty of all the developing nations within a span of 15 years. I do not say that eradication of world poverty is the responsibility of the World Bank only. It lies more on the door of the respective governments of the poor nations. Presently every government wants to banish poverty but does not know how to do it. Here is the space for the World Bank. It can easily perform the double role of a torch bearer and a helper. In-fact the Bank should have prepared a brief report for each country highlight the causes of perpetuating poverty and the remedial measures required for its eradication. Compilation of these reports in one document would have been a wonderful step in the eradication of poverty. It would be a great leap forward if the Bank does this job even now. Total eradication of poverty is a Himalayan task but definitely it is achievable The strategy as below:

a) The World Bank should associate all other lending/donor agencies like African Development Bank in this great endeavor. Even U.N.O. should also be associated in a big way. The G-8 meeting of rich countries five years back did nothing in this regard. Therefore these 8 rich countries should also rope in.

b) World Bank should then adopt ten small but very poor countries from all the continents and give full financial assistance for complete infrastructure development so that these 10 countries are able to exploit their natural resources for their total economic development. The assistance should be with one firm rider that the recipient countries will not allow their population to grow more than 0.5% per year. This project can be implemented within a span of 4 years only. Thereafter more countries can be adopted in the remaining period of 11 years.

Once the project makes a good start, all the neighboring countries would start copying this development model and start competing with one another to eradicate poverty at their own levels as quickly as possible. The consultants and engineers of donor countries will also get lot of employment opportunities under this project.

सीधी राह जैसी सरल है, वैसी ही कठिन है। ऐसा न होता तो सभी सीधी राह ही लेते । – महात्मा गांधी

c) For bigger poor countries like India, the Bank may adopt one or two states for their complete development instead of adopting the country as a whole.

7. If the Bank adopts this innovative approach and also makes adequate noise against unbridled increase in population in developing countries simultaneously, the poverty can be removed from the map of the World by the year 2028 positively.

8. Even the developed countries are having a ding-dong battle with the problem of volatility in international markets. The only shortcut to defeat this demon is to over invest in development projects in Africa and Asia. Fortunately most of the poor countries are very rich in natural resources but their Governments do not have the kneck to exploit them. The World Bank can show them the way and take the rich countries there. Heavy investment on infrastructural growth will solve all economic problems of the world and frequent recessions would become a far cry.

It is hoped that Your Good-self will take a note of my suggestions and do something in this regard.

With profound regards

Yours sincerely,

Ram Nivas Malik
Engineer-in-chief Public Health (retired)
E-1/5, Arjun Marg, DLF City Phase-1
Gurgaon-122002
M.No. 9911078502

A copy of this letter is forwarded to Mr. Onro Ruhl, Regional Director World Bank (Asia), 73 Lodh Estate, New Delhi for information and further necessary action.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 25.6/5'3" PGT (Chemistry Lecturer) HES-II Preferred class I or II officer resident of Panchkula, Chandigarh & Mohali. Avoid Gotras: Nandal, Hooda, Lakra Cont: 09915805679
- SM4 Jat Girl 25/5'7" Convent Educated B. Tech (Electronic & Communications) MBA Working in Nationalized Bank at Pinjore. Preferred match settled in Try city. Avoid Gotras: Kadyan, Malik, Tokas Cont.: 08679157130, 09466203446
- SM4 Jat Girl 29/5'2" B. Tech (INFT) Working as Assistant Manager in MNC Banglore with package Rs. 8.1 Lac PA.. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Khasa (not direct) Cont.: 09988688762
- SM4 Jat Girl (divorced) 36/5'2" B.Sc. B.Tech (Electronics) Working in Medical based company at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Panwar, Cont.: 09999359959
- SM4 Jat Girl 25.6/5'3" MBA, Gold Medalist from P.U. UGC, NET qualified. Employed in a Nationalized Bank as Officer in Chandigarh. Preferred match from Panchkula/Chandigarh. Avoid Gotras: Sangwan, Dangi, Doon, not direct Kundu, Cont.: 09988346779
- SM4 Jat Girl 27/5'5" Geologist/Scientist, M.Sc. Geology from Kurukshetra University. Working as Class-I Officer in Central Govt. at G.S.I. Dehradun. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Rathee, Cont.: 08950092430, 09416934251
- SM4 Jat Girl 26/5'1" BA, JBT Working as Restorer in Punjab & Haryana High Court Chandigarh. Avoid Gotras: Dagar, Dalal, Suhag, Cont.: 09812639204
- SM4 Jat Girl 25/5'3" JBT,BA, B.Ed. MA (Hindi) NET, GRF qualified. Working as Lecturer on contract basis at Sonepat. Avoid Gotras: Dahiya, Rangi, Banger, Cont.: 09417182285, 0130-2540251
- SM4 Jat Girl 26/5'5" MBA Working as Manager in MNC Banglore. Avoid Gotras: Baliyan, Bonkra, Cont.: 09872967299
- SM4 Jat Girl 24/5'8" MA (Economics) Avoid Gotras: Hooda, Malik, Khatri, Cont.: 09417529417
- SM4 Jat Boy 28/5'11" B.Sc.(Marine Engineering) Convent Educated. Working in Indian Navy Avoid Gotras: Kadyan, Malik, Tokas, Kaliraman, Cont.: 08679157130, 09466203446
- SM4 Jat Boy 28/5'6" MA, B.Ed., M. Tech(Urban Planning) Employed as regular Class-I Officer in Haryana Government as Assistant Town Planner in Urban Local Body Department. Avoid Gotras: Chahal, Nain, Sindhu, Cont.: 09463797561

सुंदरता वक्त की रियायत है। – अफलातून

हुनर होगा, तभी बनेंगे होनहार

tkfxUnj flag]

अपनी दुनिया खुद बनाती है तो खुद में कोई न कोई हुनर विकसित करना ही होगा........

सफलता की राह में एक बड़ी बाधा है तैयारी की कमी। इस दुनिया में कुछ भी पका–पकाया नहीं मिलता। किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है– 'मैं जितनी कड़ी मेहनत करता हूं भाग्य उतनी ही मेरे पास आता है।' सफलता और उपलब्धि पाने के लिए जरूरत से ज्यादा मनोरंजन, गपशप आदि को छोड़कर अपने निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप तैयारी करनी होगी। आपकी तैयारी ही हर मौके पर आपको फायदा पहुंचा सकती है। वही छात्र किसी परीक्षा में अच्छे अंक ला पाते हैं, जो लगातार मेहनत करते हैं। वही कारोबारी सफल हो पाते हैं, जो लगातार अपने व्यवसाय की बढ़ोतरी के बारे में सोचते है।

मेहनत के साथ–साथ खुद में वास्तविक हुनर पैदा करना भी जरूरी है। वास्तविक हुनर न हो तो सही दिशा में कदम बढ़ ही नहीं सकता। एक बार एक विद्वान ने जंग में एक युवक को आरे से पेड़ काटते देखा, जो बेहद थका हुआ लग रहा था। विद्वान ने उससे पूछा, 'तुम क्या कर हो?' युवक ने जवाब दिया, 'देख नहीं रहे हो, पेड़ काट रहा हूँ। पांच घंटे से इसको काटने में लगा हूं।' इस पर विद्वान ने उसे सलाह दी कि थोड़ा आराम कर लो और इस दौरान अपने आरे की धार को भी तेज कर लो। वह युवक उनकी सलाह को दरकिनार करते हुए अपने काम में लगा रहा। फिर बोला, 'न तो मेरे पास आराम करने का वक्त है और न ही धार तेज करने का समय। मैं तो जब तक इसे काट नहीं लूंगा, बैठूंगा नहीं' विद्वान उस मुर्ख युवक को और कुछ कहे बिना आगे बढ़ गया। ज्यादातर समय हम लोग भी अपने हुनर को निखारे बिना या पूरी तैयारी के बिना ही काम में जुटे रहते हैं। आपमें पूरी ऊर्जा होगी तो पेड़ काटने में अथवा और कोई भी काम करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। इसीलिए मेहनती बनने के साथ–साथ हुनरमंद भी बनें।

कोई भी व्यक्ति अपने क्षेत्र में उचित प्रशिक्षण प्राप्त किए बिना सफल हो ही नहीं सकता। छात्र बिना पढ़े–लिखे डॉक्टर, इंजीनियर, आफिसर आदि नहीं बन सकता। खिलाड़ी बिना अभ्यास किए बेहतर खेल ही नहीं सकता। कारोबारी व्यवसाय की बारीकियां जाने बिना सफल उद्यमी बन ही नहीं सकता। आपका संबंध चाहे जिस भी क्षेत्र से हो, आप विशेषज्ञों की मदद से खुद को प्रशिक्षित करें, हुनर पैदा करें। तभी आगे बढ़े, अन्यथा सफलता की बात न सोचें। यदि आप भी अन्य लोगों की तरह अंधाधुंध पेड़ काटने में लगे हैं तो जरा रूकें और सोचें कि आरे की धार को कैसे तेज किया जाए। इसके लिए योजनाएं बनाएं, किसी विशेषज्ञ की सलाह लें, अपने खान–पान और सेहत पर ध्यान दें, किसी बेहतर संस्थान से अपने क्षेत्र से संबंधित उचित ट्रेनिंग लें, टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखें और उचित दिनचर्या बनाकर काम करें।

सच है कि हुनरमंद मेहनती ही सफलता की सीढ़िया चढ़ते हैं इसके अलावा लक्ष्य की प्राप्ति तक अपने हुनर पर भरोसा करने की भी जरूरत है। थॉमस एडीसन ने कहा है, 'जीवन के रास्ते में कितने ही लोग घबराकर पीछे हट जाते हैं, जबकि सफलता बिल्कुल उनके आसपास ही होती है। इसीलिए रुकें नहीं, हुनर में तब तक निखार लाएं, जब तक कि मंजिल न मिल जाए।'

मठाधीश मुरब्बी जाट समाज

कर्नल मेहर सिंह दहिया (शौर्य चक्र)

Vdk& [kknk igkM] fydMh pfg;k vj ok Hkh ejh gb]
tkV vkt blh chrX;h] nq[k es tkrh uk dghA
lkr lky rs ;k fQjs HkVdrk] ennk vkj{k.k Bkds]
dN VkMj vkys xejkg djX;s] pkMs es bls Hkdk ds]
lkB&lkB dh ck/k xkBMh] Vd nh pMhx<s tkds]
vi.kh fl;klr ok pedkxs] pus ds >kM p<kdsA
ekxs rs Hkh c<Ók crkds] >B us djs lgh]
[kknk igkM] fydMh pfg;k——AA

,d nkj pyk iapk;rk dk] ennns xky Bk fn;s]
efjt ,DV ;k vkuj fdfyax] nknkykbZ c.kk fn;s]
eap vkj ekbZd dk nq[k rek'kk] ehfM;k vkys vk fy;s]
cnh dh ekgj yok [kki is] lc ikNs yk fy;s]
ds ckoys ds /kkys] ds ihys&dkfy;s] lcdh geus lgh]
[kknk igkM] fydMh pfg;k——AA

cMk gklk bldh egklHkk dk] NkVs jke th futh crkos]
ok Hkh fQjs :Mrh xky es] ,sj&xSjs e[kkSy mMkos]
eqVBh Hkj ok ykx feyxs] tk gj ep dCtkos]
:i Hkjs] Fkgs ekjs] vi.kh us vly crkos]
dke ds ok cVVk ykos] ftudh uk ?kj es c> gbA
[kknk igkM] fydMh pfg;k——AA

vly ennk cnyko dk] lalk/ku is lc jkyk ls]
xSj djs tkV dk Hk; ugh] viu&viuk us [kc >dkyk ls]
?kjk iMÓk pkxjns bldk] pØ0;g ;s vkyk ls]
rkMuk iMs ;s ,d fnu yktehs] ;s dykukj dk dkyk ls]
le; fopkj] vnn lEHkky rs tUetkr Hkkyk ls]
D;ks fQjs HkVdrk vkyk&lkyk ls]
eku duy egj flag dgh [kknk igkM] fydMh pfg;k——AA

गज़ल

&Mk ykd lfr;k

viuk cukuk ugh vk;k ges
fny dk nq[kkuk ugh vk;k gesA
fdlh ls b'd ge D;k djrs
fny gh yxkuk ugh vk;k gesA
dj fn;s vkalw ;w gh cckn
v'd cgkuk ugh vk;k gesA
eqLdjkrs jgs xeks es ge] jkuk
vkj :ykuk ugh vk;k gesA
th rks fy;k gS gj gky es
vHkh ej tkuk ugh vk;k gesA

Jat Sabha Chandigarh (Regd.)

2014

अवकाश सूची

सभी रविवार एवं शनिवार

गुरू गोबिन्द सिंह जयन्ती	07 जनवरी
गणतन्त्र दिवस	26 जनवरी
बसन्त पंचमी एवं सर छोटूराम जयन्ती	04 फरवरी
गुरू रविदास जयन्ती	14 फरवरी
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती	24 फरवरी
महा शिवरात्रि	27 फरवरी
होली	17 मार्च
शहीदी दिवस भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव	23 मार्च
रामनवमी	08 अप्रैल
महावीर जयन्ती	13 अप्रैल
बैशाखी	14 अप्रैल
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रैल
भगवान परशुराम जयन्ती	01 मई
महाराणा प्रताप जयन्ती	31 मई
संत कबीर दास जयन्ती	13 जून
ईद–उल–फितर	29 जुलाई
तीज	30 जुलाई
स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त
जन्माष्टमी	18 अगस्त
विश्वकर्मा दिवस	17 सितम्बर
हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस	23 सितम्बर
महाराजा अग्रसेन जयन्ती	25 सितम्बर
महात्मा गांधी जयन्ती	02 अक्तूबर
दशहरा	04 अक्तूबर
ईद–उल–जुहा (बकरीद)	05 अक्तूबर
महर्षि बाल्मीकी जयन्ती	08 अक्तूबर
दीवाली	23 अक्तूबर
हरियाणा दिवस	01 नवम्बर
गुरू नानक देव जयन्ती	06 नवम्बर
क्रिसमस दिवस	25 दिसम्बर
शहीद उधम सिंह जयंती	26 दिसम्बर

वैकल्पि अवकाश

मिलाद–उल–नबी / ईद–ए–मिलाद	14 जनवरी
गुड फ्राइडे	18 अप्रैल
बुद्ध पूर्णिमा	14 मई
गुरू अर्जुन देव शहीदी दिवस	12 जून
उधम सिंह शहीदी दिवस	31 जुलाई
रक्षा बंधन	10 अगस्त
करवा चौथ	11 अक्तूबर
गोवर्धन पूजा	24 अक्तूबर
महोरम	04 नवम्बर
गुरू तेग बहादुर शहीदी दिवस	24 नवम्बर

January

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

February

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

March

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

April

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

May

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

June

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

July

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

August

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

September

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

October

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

November

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

December

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो॰ : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो॰ : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।